भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 14 - 18 सितम्बर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

माह सितम्बर	मौसम 1st-7th सितम्बर 2016	वास्तविक वर्षा (मिमी) सितम्बर-२०१६							मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी) सितम्बर-२०१६					सलाह
दिनांक		7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	
पंजाब														फरीदकोट में बीटी संकरों पर बहलेवाल तथा धाब शेरसिंह गाँवों के एक-एक स्थलों को छोड़कर रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई| मुक्तसर के 31 गांवों में सफेद मक्खी के लिए सर्वेक्षण किया गया| इनमें से पाँच गावों के केवल 10 स्थानों, नामत:, गोंनियाना (5 स्थानों), डबवालीढाब (01 स्थान पर), शामखेरा गाँव के 02 स्थानों पर, लालबाई के एक स्थान पर, तथा कोटबाई के 01 स्थान पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| भटिंडा के कुल 17 गावों का सर्वेक्षण किया गया| इनमें से सिर्फ 04 स्थानों पर बीटी संकरों में सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई|
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	10	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा														

सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	हरियाणा के हिसार, सिरसा तथा फतेहाबाद जिलों के 30 किसानों के कपास के खेतों का सर्वेक्षण किया गया| इनमें सभी स्थानों पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम रिकार्ड की गई| जैसिड की संख्या 0-1 प्रति 3 पत्ति और फूलकिट की संख्या 0-3 प्रति 3 पत्ति के मध्य संरक्षण रहित परिस्थितियों में दर्ज की गई| कुछ स्थानों में गूलर की चित्तीदार सूँडी तथा *हेलिकोवर्पा* आर्मीजेरा (अमेरिकन सूँडी) का प्रकोप देसी कपास तथा बीटी रहित अमेरिकन कपास में पाया गया| हरियाणा के कुछ भागों में कपास पर्णकुंचन रोग नाममात्र से लेकर ग्रेड-III की तीव्रता के मध्य देखा गया|
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान														राजस्थान के वर्षा आधारित क्षेत्रों (बांसवाडा) में दनक्षरी , कुशालगढ़ तथा पागरी गावों के प्रत्येक दो स्थानों में केवल जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई|
हनुमानगढ़	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	11	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	35	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा														बादलों के मौसम के कारण कलियों तथा फूलों का अत्याधिक झड़न देखा गया| कलियों तथा फूलों के झड़न की रोकथाम के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल पर प्लानोफिक्स का @7मिली/15ली पानी की दर से छिड़काव करें| चेंपा(एफीड), जैसिड, अर्द्धकुण्डलक इल्ली तथा टिड्डों की संख्या वृद्धि की रोकथाम के लिए कपास के खेतों को खरपतवारों से मुक्त रखें|
कोरापुट	150.4	0	1	1	8	11	26	8	23	20	19	31	9	
कालाहांडी	131.1	4	5	8	110	0	27	31	21	20	18	14	12	
बोलांगीर	146.8	0	23	4	7	6	16	4	20	23	16	14	19	

अमरेली	3	2	0	2	5	0	0	0	0	4	6	12	44	सूरत तथा आस-पास के क्षेत्रों में रुक-रुक कर, समय-समय पर होने वाली वर्षा के कारण फसल पर छिड़काव के कार्य में रुकावट आई| सूरत के 09 गांवों में किए गए सर्वेक्षण में जैसिड तथा थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई जबकि पिपलिया गांव के एक स्थान पर मिलीबग का प्रकोप ग्रेड-II में दर्ज किया गया| दूसरी ओर बीजी-II बीटी संकरों पर लिंबज, समलोड तथा बमदूसर गांवों के क्रमश: 01, 02 तथा 03 स्थानों पर फूलों में गुलाबी सूँडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड किया गया| गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में फसल शीर्ष पुष्पन अवस्था में है| सर्वेक्षण किए गए 15 गांवों में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई जबकि जैसिड (5-7 प्रति 3 पत्ति प्रति पौधा) तथा थ्रिप्स (8-10 प्रति 3 पत्ति प्रति पौधा) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई | दूसरी ओर मिलीबग (0 से 01 ग्रेड प्रति पौधा) आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज किया गया| बीटी संकरों पर गूलर की गुलाबी सूँडी की संख्या 02 सूँडी प्रति 20 पुष्प दर्ज किया गया| जीवाणु पत्ती झुलसा तथा *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा रोगों का प्रकोप छिट-पुट स्थानों पर दिखाई दिया|
भावनगर	28	15	5	0	0	1	0	0	0	5	8	12	54	
जामनगर	2	0	0	0	0	0	0	0	0	4	7	10	8	
राजकोट	4	0	0	0	0	0	0	0	0	5	7	10	16	
भरूच	9	1	6	4	0	0	0	0	0	8	10	12	67	
सबरकांठा	20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	5	0	
सुरेन्द्रनगर	16	4	0	0	0	0	0	0	0	3	5	8	46	
अहमदाबाद	22	2	0	0	0	0	0	0	0	4	7	8	0	
वडोदरा	19	4	0	0	0	0	0	0	0	6	7	8	12	
पाटन	8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	6	10	1	
मेहसाना	13	0	0	0	0	0	0	0	0	0	6	10	1	
मध्य प्रदेश														लगातार वर्षा होने से फसल की वृद्धि धीमी हुई है तथा खरपतवारों का प्रकोप बढ़ा है| अतिरिक्त वर्षा जल की निकासी तथा अंत:सस्य क्रियाओं को प्राथमिकता दें| प्रदेश के लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी जैसे रस चूषक
खरगोन	42	0	0	0	0	0	0	0	6	10	18	15	2	
धार	20	0	0	0	0	0	0	0	7	11	17	11	12	
खंडवा	13	0	0	0	0	0	0	0	6	10	18	15	11	

महाराष्ट्र													
धुले	0	0	0	0	0	0	0	0	2	4	10	9	0
नांदूरबार	12	1	6	7	1	1	1	0	2	1	7	6	4
जलगांव	29	2	0	1	0	0	0	0	7	5	30	29	0
अहमदनगर	1	0	1	1	0	0	0	0	5	5	13	40	0
औरंगाबाद	25	0	0	1	0	3	0	0	2	3	13	25	0
जालना	59	0	0	2	0	0	0	0	2	0	13	40	0
बीड़	20	0	0	0	0	0	0	0	4	3	15	48	0
नांदेड़	22	0	0	1	0	0	0	9	4	3	5	20	0
परभणी	23	0	0	1	0	0	0	1	3	1	10	30	0
हिंगोली	28	0	0	0	0	0	0	1	4	2	10	20	1
बुलढाना	32	1	0	0	0	0	0	0	5	4	28	40	17
अकोला	15	0	0	0	0	0	0	1	7	11	38	45	5
वासिम	28	0	0	0	0	0	0	0	8	10	23	35	15
अमरावती	27	0	0	0	0	0	0	0	13	29	38	45	21
यवतमाल	14	0	0	0	0	3	3	14	8	16	17	25	12
वर्धा	29	0	1	0	0	1	2	5	11	27	20	28	7
नागपुर	10	0	0	0	0	6	4	21	8	25	11	18	9
चन्द्रपुर	14	0	0	0	0	72	22	58	19	15	11	11	4
तेलंगाना													

कीटों की उपस्थिति दर्ज की गई है| रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर पार करने पर कपास मैन्युअल में दिए गए रोकथाम के उपायों को प्रारंभ करने की सलाह किसानों को दी जाती है| किसी भी रोग का प्रकोप फसल पर नहीं देखा गया है

नांदेड जिले के पाँच गावों में किए गए सर्वेक्षण में बीजी-II बीटी संकरों में 3 से 4 स्थानों पर सफ़ेद मक्खी, जैसिड, फूलकीट(थ्रिप्स) तथा गूलर की गुलाबी सूँडी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई| धनेगाव गांव के एक स्थान पर मिलीबग का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया| अकोला तथा नागपूर के बारानी क्षेत्रों में वर्षा समाप्ती की ओर है, इसलिए नमी संरक्षण के उपायों को अमल में लाने की आवश्यकता है| अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर पार कर चूकी है| बढ़ते तापमान के साथ थ्रिप्स के कारण कलियों का झड़न प्रारंभ हुआ है| मृदा नमी की कमी को पूरा करने के लिए उपलब्ध होने पर संरक्षित सिंचाई की सिफारिश की जाती है|

आदिलाबाद	18	0	0	0	1	3	6	19	33	32	23	18	1	शुष्क तथा आर्द्र स्थिति में थ्रिप्स तथा एफीड की संख्या वृद्धि जारी है| कलियों तथा गूलरों के झड़न की रोकथाम के बचावात्मक उपाय के रूप में फसल पर प्लानोफिक्स का छिड़काव किया जा सकता है|
वारंगल	37	0	0	0	11	16	3	3	6	3	0	0	0	
खम्मन	68	0	0	0	6	21	1	5	21	11	0	0	0	
कारिंगर	22	0	0	1	1	33	8	15	6	23	14	1	3	
नालगोंडा	24	0	0	0	2	11	12	56	15	2	0	0	0	
महबूबनगर	8	0	0	0	0	12	11	19	6	9	0	0	0	
आंध्रप्रदेश														
गुन्टूर	10	0	0	0	7	18	18	52	28	10	0	0	0	आंध्र प्रदेश के अधिकांश भागों में सूखा जैसी स्थिति समय-पूर्व बनी हुई है| अभी हाल की वर्षा से थोड़ी राहत मिली है| जैसिड तथा थ्रिप्स का प्रकोप दर्ज किया गया है| थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई है| गूलर की गुलाबी सूँडी तथा गुलाबवत् फूल फसल पर देखे जा सकते हैं| जिनकी संख्या अनंतपुर तथा कडप्पा जिलों में आर्थिक हानि स्तर को पार कर चुकी है| गुलाबी सूँडी के सर्वेक्षण के लिए सामुदायिक स्तर पर कपास के खेतों में फीरोमोन ट्रैप तुरंत स्थापित करें| गुलाबवत् फूलों की संख्या तथा हरे गुलरों के नमूनों में गुलाबी सूँडी की संख्या नियमित देखते रहें| गुलाबवत् फूलों, झड़ी हुई कलियों, सूखे फूलों तथा पूर्ण वृद्धि पूर्व झड़े हुए गूलरों को प्रारंभिक अवस्था में ही इस सूँडी की संख्या वृद्धि रोकने के लिए नष्ट करते रहें| अंडनिक्षेपण रोकने के लिए पुष्पन अवस्था में निरोधक उपाय के रूप में 5% निंबोली गिरी के अर्क का छिड़काव फसल पर करें| आठ पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्री अथवा फूलों पर 10 सूँडियाँ अथवा 10 हरे गूलर के आर्थिक हानि स्तर पर आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का छिड़काव फसल पर करें| स्थाई कीटनाशकों का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करने की सिफ़ारिश की जाती है|
प्रकासम	7	0	0	0	0	5	10	69	6	9	0	0	0	

														जलवायु के उतार-चढ़ाव तथा मौसम की असामान्य स्थितियों के कारण विभिन्न बीटी संकरों में सूखा की स्थिति निर्माण के साथ विभिन्न तीव्रता का दैहिकीय लाल पत्ती रोग देखा गया है| लाल पत्ती रोग के लिए उपचारात्मक उपाय: पर्याप्त वर्षा मृदा नमी प्राप्त होने के तुरंत बाद नत्र तथा पोटाश के रूप में पोषकतत्वों की कमी को पूरा करने के लिए उर्वरकों का पहला मृदा अनुप्रयोग| यूरिया 1-2%+1.0% मेग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2% पोटेशियम नाइट्रेट (बहु पोटाश)+1.0% मेग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2%डीएपी+1% मेग्नीशियम सल्फेट का 5-7 दिनों के अंतराल पर फसल की आयु तथा पौधों में भरपाई होने तक फसल पर छिड़काव करें| गुंतूर के सर्वेक्षण किए गए 10 गावों में से सभी में 1 से 2 स्थानों पर थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई नांदयाल में किए गए सर्वेक्षण में गुंथनाल तथा येरागुंतला गावों में जैसिड (1-2 स्थानों पर) तथा थ्रिप्स (प्रत्येक गाँव में एक स्थान पर) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई|
कर्नाटक														
धारवाड़	4	1	0	0	0	0	0	3	6	5	13	18	1	अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है| हवेरी तथा बेलगाम जिलों में अगेती बोई गई बीटी कपास की फसल में गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है| बीटी कपास के खेतों में बड़े पैमाने पर गुलाबी सूँडी के पतंगों को पकड़ने के लिए फीरोमोन ट्रैप स्थापित करें| गुलाबी सूँडी के प्रकोप का प्रबंधन करने के लिए सिफ़ारिश किए गए कीटनाशकों में से बदल-बदल कर 2मिली/ली पानी की दर से छिड़काव करें| धारवाड़ तथा बेलगाम जिलों के कपास उत्पादक गावों में *एल्टरनेरिया* पत्ती गलन रोग का प्रकोप देखा गया है|
हवेरी	3	0	0	0	0	0	0	2	6	10	18	22	2	
मैसूर	2	2	0	0	0	4	1	0	6	9	25	28	0	

														धारवाड़ जिले के 09 गावों में किए गए सर्वेक्षण में 2-3 स्थानों पर थ्रिप्स तथा हनुमरट्टी तथा खानगावी गाँवों में प्रत्येक के 03 स्थानों पर जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक फर्स्ट क्लास, एमआरसी-6918, एवरेस्ट तथा कृषिधन बीटी संकरों पर रिकार्ड की गई|
तामिलनाडु														
पेरंबलुर	47	2	0	0	1	5	0	0	1	1	1	0	0	फसल वनस्पतिक अवस्था में है| अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में विगत सप्ताह सूखे की स्थिति बनी रही| 15 से 20 दिनों की फसल में पौध विरलीकरण की सिफ़ारिश की जाती है| निराई तथा सिंचाई कार्य करने की सिफ़ारिश की जाती है| फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए 25 से 35 दिनों की फसल में हाथ से निराई करने की सलाह दी जाती है| एफीड का प्रकोप देखा गया है| ग्रीवा विगलन रोग दिखाई देने पर कॉपर-ऑक्सीक्लोराइड @1.0 ग्रा/ली पानी की दर से इसके घोल से प्रभावित पौधों के जड़ क्षेत्र की मृदा को तर करें|
सलेम	13	5	0	0	0	2	0	0	1	1	0	0	0	
त्रिची	16	0	0	0	2	0	0	1	0	1	0	0	0	
विरुडुनगर	9	0	0	0	0	10	0	0	0	3	8	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग तथा प्रभारी, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)